'इतिहास ग्रंथ' जो अब तक
ना कहा गया ना लिखा गया

वी.पी.सिंह चंद्रशेखर सोनिया गाँधी और मैं

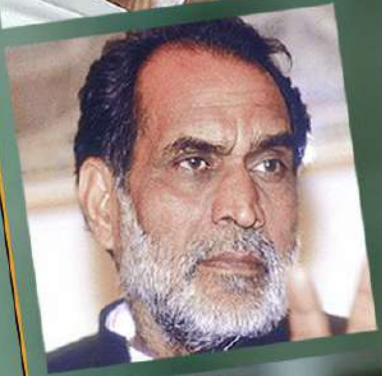

संतोष भारतीय

"वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं"

इस किताब को क्यों पढ़ें

यह किताब *"वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं"* एक ऐसा अनसुना और अनकहा प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है जिसे संतोष भारतीय ने लिखा है | संतोष भारतीय राजनीतिक पत्रकारिता की दुनिया में अपनी हिम्मत और विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध हैं|

यह किताब हर उस भारतीय को ज़रूर पढ़नी चाहिए जो भारतीय राजनीति की थाह को मापना चाहता है। यह किताब आपको बीते वर्षों के राजनीतिक परिवेश को समझने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। किताब इस तरह से लिखी गई है जो उस नज़रीय और रूढ़ीवादी छवि को बदल सकती है जो आमतौर पर वी.पी सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी के बारे में है, बल्कि उन सभी के बारे में जो 80 के दशक की राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा थे। वास्तव में, आप उस युग के राजनीतिक नेताओं, नौकरशाही और उद्योगपतियों के अचंभित और अप्रत्याशित खुलासों से हैरान , आश्चर्यचकित और स्तंभित हो जाएँगे|

इसकी हर घटना ज़िंदगी भर का पाठ पढ़ाकर ज़िंदगी के पटल पर अपनी छाप छोड़ जाती है। संतोष भारतीय ने उन पलों को लिखने के लिए खूबसूरती से डिजाइन किया है, तैयार किया है और सही शब्दों का चयन किया है। उन्होंने बहुत ईमानदारी और ज़िम्मेदारी के साथ किताब लिखी है जिसमें ज्ञान, महत्वाकांक्षाओं, अंतर, पीड़ा, भय, जोखिम और निश्चित रूप से साहस के उन सभी क्षणों को दर्शाया है।

यह बेहद खूबसूरत गैर-राजनीतिक रूप से लिखित राजनीतिक इतिहासों में से एक है।

यह किताब आधुनिक राजनीतिक इतिहास और समकालीन भारतीय राजनीतिक इतिहास के अंतर्गत आती हैं।

| सतोष भारतीय

भारत के सबसे *'निर्भीक और विश्वसनीय पत्रकार'* के रूप में विख्यात संतोष भारतीय ने अपनी सामाजिक सक्रियता का सफर आठवें दशक के आरंभिक वर्षों में शुरू किया। उन्होंने अपने साथियों के साथ बिहार में *'दाम बाँधो'* आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन को जे.पी आंदोलन का शुरुआती चरण माना जाता है। इस आंदोलन के चलते सबसे पहले जिन तीन लोगों की गिरफ़्तारी *मीसा* में हुई उनमें संतोष भारतीय भी थे। जयप्रकाश नारायण ने सारे देश में आंदोलन शुरू करने के लिए जिन अट्ठारह लोगों की टीम बनाई उसमें संतोष भारतीय एक सदस्य थे। बाद में संतोष भारतीय को जे.पी ने अपने संगठन *'संघर्ष वाहिनी'* का ऊ.प्र का संयोजक नियुक्त किया । आपातकाल के बाद, जे.पी की सलाह पर ही वे पत्रकारिता में आए।

आनंद बाज़ार की बहुचर्चित साप्ताहिक पत्रिका *'रविवार'* के विशेष संवाददाता के रूप में उन्होंने पत्रकारिता का सफ़र शुरू किया। दस साल तक यहाँ काम करने के बाद *'द टेलीग्राफ़'* में भी विशेष संवाददाता रहे। 1985 में दूरदर्शन पर *'करंट अफ़ेयर्स'* का प्रोग्राम *'न्यूज़लाइन'* शुरू हुआ। संतोष भारतीय यहाँ भी विशेष संवाददाता रहे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में न्यूज़ के साथ फुटेज दिखाने के चलन का 'आरंभकर्ता' इन्हीं को माना जाता है । 1998 में उन्होंने *'हेड-लाइन'* न्यूज़ और फ़ीचर एजेन्सी शुरू की जो उस समय के लगभग तीन हज़ार समचार पत्र और पत्रिकाओं को समाचार और फीचर मुहैया करवाती थी। देश के पहले निजी न्यूज़ चैनल *'जैन टीवी'* के लिए भी संतोष भारतीय ने 'ट्रेंड सेटर' प्रोग्राम बनाए और यादगार एंकरिंग की।

1986 में उन्होंने पूर्व सांसद और उद्योगपति कमल मोरारका के साथ '*चौथी दुनिया'* अख़बार शुरू किया। भारत में, हिन्दी का यह पहला साप्ताहिक अख़बार है। इस अख़बार ने एक प्रधानमंत्री को हटाने और एक को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

1989 में संतोष भारतीय ने फर्रुखाबाद से लोक सभा का चुनाव जीता वे उस नौवीं लोक सभा के सदस्य रहे जिसमें वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री थे और संसद में चंद्रशेखर, राजीव गाँधी, लालकृष्ण आडवाणी, सोमनाथ चटर्जी, एन.जी रंगा और रबी रे जैसे दिग्गजों की मौजूदगी थी। संसद सदस्य रहते हुए संतोष भारतीय ने *'प्रसार भारती बिल'* रखते हुए माँग की, कि संसद की कार्यवाही जनता को दूरदर्शन के माध्यम से लाइव दिखाई जानी चाहिए, यह नौवीं लोक सभा थी पर दसवीं लोक सभा ने इसे मान दूरदर्शन पर लाइव दिखाना शुरु किया। सांसद रहते हुए उन्होंने *'धर्मयुग', 'इलस्ट्रेटेड वीकली', 'पंजाब केसरी'* और '*करंट'* जैसी चर्चित पत्रिकाओं में सामाजिक विषयों पर लगातार लिखा। कुछ समय के बाद पुन: *'चौथी दुनिया'* शुरू किया। इस अख़बार के अंतर्गत लगभग 600 ऐसी *'ब्रेकिंग स्टोरी'* की गईं जिसने देश की राजनीति और उद्योग जगत पर कई बार निर्णायक प्रभाव डाला । लोक सभा और राज्य सभा में अनेक बार '*चौथी दुनिया'* अख़बार की प्रतियाँ लहराई गईं और उन पर वाद-विवाद हुआ। संतोष भारतीय लगातार सभी महत्वपूर्ण न्यूज चैनलों के मुख्य पैनेलिस्ट के तौर पर दिखाई देते रहे हैं।

इन दिनों,*'चौथी दुनिया'* के अलावा संतोष भारतीय डिजिटल जगत का बहुचर्चित ब्रांड *'लाउड इंडिया टी.वी'* के फाउंडर-एडिटर-डायरेक्टर हैं और लोकप्रिय विश्लेषक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के त्वरित टिप्पणीकार के रूप में जाने जाते हैं। 2021 *'किसान आंदोलन काल'* के नाम से जाना जाएगा। किसानो के समर्थन में सही और सटीक जानकारी जनता को देने के लिए संतोष भारतीय इन दिनों चर्चा में हैं। उनके लाखों प्रशंसक और फॉलोअर्स हैं।

www.santoshbhartiya.com

प्रकाशित पुस्तकें

निशाने पर-समय, समाज और राजनीति-2005
पत्रकारिता- नया दौर नए प्रतिमान-2005
चुनाव रिपोर्टिंग और मीडिया-2006
Dalit and Minority Empowerment -2008(English-Hindi)
कमज़ोर दुनिया का रास्ता (2009)
वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं-2021

वो कुछ दीवाने थे
जो चुनौतियों की बारिश के बीच
इतिहास रच रहे थे।
और मैं,
क़तरों को जोड़कर मोती समेट कर
इतिहास गूँथ रहा था।

संपादकीय| वी. पी. सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं

एक व्यक्ति जब देश की महत्वपूर्ण निर्णायक घटनाओं का हिस्सा बन जाए तो वह असाधारण, अनमोल और विलक्षण हो जाता है। संतोष भारतीय एक ऐसे शख्स का नाम है, जिसने भारत की राजनीति के चढ़ते, उतरते, बदलते तेवर देखे हैं और राजनेताओं की महत्वाकांक्षाओं की बनती, उछलती, बिखरती, टूटती लहरें भी देखी हैं। संतोष जी के लिए 'संतोष भारतीय' होना इतना आसान नहीं था, उन्होंने अपने जीवन के अलावा कई एतिहासिक लोगों के जीवन को जिया है और वह भारत के महान राजनेताओं के सहयात्री इस तरह रहे कि आज वह खुद उस कालखंड का आइना बन गए हैं। वे एक जीता जागता encyclopedia हैं जो उस वक्त की गाथा जब कहते-लिखते हैं -तो शब्द शब्द सच्चा और प्रामाणिक लगता है। वी. पी. सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं, एक साधारण किताब नहीं है यह भारत के उस बदलते समय का 'इतिहास ग्रंथ ' है जो अब तक ना कहा गया ना लिखा गया।

संतोष जी के हाथ से लिखी एक हज़ार पन्नो की manuscript मेरे सामने थी। उन्होंने यह एक हज़ार पन्ने तीन महीनों में धारा प्रवाह लिख डाले थे। खास बात यह है कि पन्नो पर कोई शब्द कटा हुआ नहीं था, ना कोई वाक्य दोबारा लिखा हुआ । जैसे इलहाम हुआ हो किसी को और वो लिखता चला जाए। मगर ये इलहाम नहीं था बल्कि जुनून था, प्रेम था, सच्चाई थी, संवेदनशीलता थी, क़द्र थी, फिक्र थी उस समय के हर उस व्यक्ति के प्रति, जो भारत को महा देश बनाने में सहभागी था। जैसे-जैसे इस किताब पर काम होता गया वैसे-वैसे उस दौर के हिन्दुस्तान के उन महानायकों से मेरी मुलाक़ात होती चली गई। इस किताब को संतोष जी ने पटकथा की तरह लिखा है। पढ़ने वाला उस काल में यात्रा करने लगता है और उसकी नज़र के सामने दृश्य चलने लगते हैं ।

इस किताब का संपादन, इसकी संरचना और आप तक पहुँचाना बहुत ही दिलचस्प और चुनौतियों से भरा सफ़र था। मैं ही नहीं टीम का हर व्यक्ति इस किताब में लिखे 'वक़्त' को जी रहा था। किताब का काम खत्म हुआ तो लगा कि ज़िंदगी में कुछ कमी सी हो गई हो। हम सब लोग अपने आस-पास वी पी. सिंह, चंद्रशेखर और सोनिया गाँधी की कमी महसूस कर रहे थे। यह संतोष जी की क़लम की ताक़त है कि हम सब लोग किताब के हर किरदार के साथ खुद को देखने लगे और हम भी उन सबके साथ उनके ऐतिहासिक सफ़र का हिस्सा हो गए।

इस किताब की खास बात यह है कि इसका हर एक पन्ना, 'एक कहानी' कहता है। जिस पन्ने को पलट कर देखिए उस पर एक ऐसी घटना दर्ज है जो पढ़ने वाले को बाँध लेती है। पढ़ने वाला यह किताब पूरी पढ़े बिना छोड़ नहीं पाता है। यह भारत के राजनैतिक इतिहास का ऐसा दस्तावेज़ है जिसे हर हिन्दुस्तानी को पढ़ना चाहिए और समझना चाहिए। उस एक 'वक़्त के टुकड़े' में भारत किस तरह विकसित हुआ, कैसे लम्हा लम्हा आगे बढ़ा, क्या फ़ैसले लिए गए, वो कैसे हालात थे और वो कौन लोग थे जिन्होंने भारत की तस्वीर बदल देने वाले निर्णय लिए। संतोष भारतीय अगर यह किताब ना लिखते तो भारत के इस राजनैतिक इतिहास के हिस्से के साथ अन्याय होता।

इस किताब को पढ़ने के बाद सिर्फ राजनीति के इन महारथियों के जीवन-विस्तार का ही पता नहीं चलता बल्कि संतोष जी के 'larger than life' व्यक्तित्व का भी पता मिलता है। इस किताब को पढ़कर यह भी मालूम होता है कि देश के लिए निःस्वार्थ प्रेम, आम आदमी के प्रति आदर और एहमियत, खुद को पीछे रखकर अच्छे और क़ाबिल लोगों को राजनीति में लाना, आश्चर्यचकित करने वाले त्याग संतोष जी के व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। प्रभावशाली राजनितज्ञों को एकजुट कर उन्हें तैयार करना कि वे अपना अहम और व्यक्तिगत राजनैतिक स्वार्थ को एक तरफ रखकर देश के हित में काम करें, ऐसे असम्भव कार्यों को सम्भव करने के काम संतोष जी ने अपनी ईमानदारी, बुद्धि और कमाए हुए विश्वास से किए होंगे।

संतोष भारतीय पत्रकारिता की दुनियाँ के शिखर व्यक्तित्व हैं। राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विश्लेषण के विधा-गुरु हैं, एक बेहतरीन इंसान हैं एक ज़िम्मेदार भारत के नागरिक हैं और इसीलिए वे इतनी जटिल, चुनौतीपूर्ण और कूटनीति से भरी ऐतिहासिक घटनाओं को इस किताब में इतनी सरलता से कह गए। आप इस . किताब को पढ़कर कहेंगे कि आप एक 'वक़्त' से गुज़र कर आए हैं।

प्रो० फ़ौज़िया अर्शी

www.fauziaarshi.in

Book Available On:

Warrior's Victory

Hardcover book :
https://warriorsvictory.co.uk/product/v-p-singh-chandrashekhar-sonia-gandhi-main/

E-book:
https://warriorsvictory.co.uk/product/v-p-singh-chandrashekhar-sonia-gandhi-aur-main/

Amazon

Hardcover book:
https://www.amazon.in/dp/8195103952/ref=sr_1_1?dchild=1&keywords=vp+singh+chandrashekhar&qid=1624002558&sr=8-1

E-book:
https://www.amazon.in/dp/B095PSPVP3/ref=cm_sw_r_wa_apa_glt_MHARFY5ZDSNEHZH7V3XY

Flipkart

Hardcover book:
https://www.flipkart.com/v-p-singh-chandrashekhar-sonia-gandhi-aur-main/p/itmb90e0be3c0560?pid=9788195103959

Google Play

E-book:
https://play.google.com/store/books/details/Santosh_Bhartiya_V_P_Singh_Chandrashekhar_Sonia_Ga?id=sMwvEAAAQBAJ

For more details contact us:
https://warriorsvictory.co.uk
office@warriorsvictory.co.uk

https://www.santoshbhartiya.com